"जप-तप"

• हरि हरि करह नित कपट कमावहि हिरदा सुध न होई ।
अनदिन करम करह बहुतेरे सुपनै सुख न होई ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की शरण में नहीं आते वैसे ज़ुबानी - ज़ुबानी राम - राम उचारते रहते हैं, सदा धोखा - फरेब भी करते रहते हैं, उनका दिल पवित्र नहीं हो सकता । वह मनुष्य तीर्थ स्नान आदि निहित अनेक धार्मिक कर्म हर वक्त करते रहते हैं, पर उन्हें कभी सपने में भी आत्मिक आनंद नहीं मिलता ।

गिआनी गुर बिन भगति न होई । कोरे रंग कदे न चड़े जे लोचे सभ कोई ।

अर्थः- हे ज्ञानवान ! गुरु की शरण पड़े बिना भक्ति नहीं हो सकती मन पर प्रभु की भक्ति का रंग नहीं चढ़ सकता, जैसे चाहे हरेक मनुष्य तरले करता फिरे, कभी कोरे कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता ।

जप तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोग न जाई । अंतर रोग महा अभिमाना दूजे भाइ खुआई ।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य मंत्रों का जाप, धूनियों का तपाना आदि कष्ट देने वाले साधन करता है, ब्रत रखता है, पर अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य का आत्मिक रोग दूर नहीं होता । उसके मन में अहंकार का बड़ा रोग टिका रहता है । वह माया के मोह में फंस के गलत राह पर पड़ा रहता है ।

बाहर भेख बहुत चतुराई मनूआ दह दिस धावे । हउमै बिआपिआ सबद न चीन्हे फिर फिर जूनी आवे ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु से टूटा हुआ मनुष्य लोगों को दिखाने के लिए धार्मिक भेस बनाता है, बहुत सारी चुस्ती - चालाकी दिखाता है, पर उसका अनुचित मन दसों दिशाओं में दौड़ता फिरता है । अहंकार - घमंड में फसा हुआ वह मनुष्य गुरु के शब्द से सांझ नहीं डालता, वह बार - बार जूनियों के चक्कर में पड़ा रहता है ।

नानक नदरि करे सो बूझे सो जन नाम धिआए । गुर परसादी एको बूझे एकस माहि समाए । (4-732)

अर्थः- हे नानक ! कह हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा मेहर की निगाह करता है, वह आत्मिक जीवन के रास्ते को समझ लेता है, वह मनुष्य सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता है, गुरु की कृपा से वह एक परमात्मा के साथ ही सांझ बनाए रखता है, वह एक परमात्मा में ही लीन रहता है ।

- सो जप सो तप सा व्रत पूजा जित हरि सिउ प्रीति लगाई ।
  बिन हरि प्रीत सभ झूठी इक खिन महि बिसर सभ जाई ।

(4-720)

अर्थः- हे मन ! जिस नाम जपने की इनायत से परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहती है, वह नाम जपना ही जप है, वह नाम जपना ही तप है, वह नाम जपना ही व्रत है, वह नाम जपना ही पूजा है । प्रभु -चरणों के प्यार के बिना और जप - तप आदि का प्यार झूठा है, एक छिन में वह प्यार भूल जाता है ।

- सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ।
  नानक सतिगुर मिले मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ।

(1-1332)

अर्थः- सिरे की बात कर्मकांड के सारे धर्म, बाहरी स्वच्छता, बाहरी संयम, जप - तप और तीर्थ स्नान यह सारे ही गुरु के शब्द में बसते हैं भाव, प्रभु की महिमा की वाणी में जुड़ने वाले को इन कर्मों - धर्मों की आवश्यकता नहीं रह जाती । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु की मेहर से गुरु को मिल जाता है । गुरु की शरण आ जाता है उस के सारे दुख, कष्ट, पाप और मौत आदि के डर दूर हो जाते हैं ।

• जप तप संजम सभ गुर ते होवै हिरदे नाम वसाई । नानक नाम समालहि सेजन सोहनि दरि साचे पति पाई । (3-602)

अर्थः- गुरु के माध्यम से परमात्मा का नाम दिल में आ बसता है - यही है जप, यही है तप और यही है संजम । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु का नाम हृदय में बसाए रखते हैं, वे सुंदर जीवन वाले बन जाते हैं, सदा स्थिर प्रभु के दर पर उनको सम्मान मिलता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"